# उड़ता चल कबूतर

– रामवृक्ष बेनीपुरी

*उड़ता चल कबूतर एक यात्रा वृतान्त है। इसमें लेखक ने बिहार से दिल्ली तक की यात्रा का वर्णन बड़े ही रोचक ढंग से किया है। आचार्य नरेन्द्रदेव के सान्निध्य में यूरोप की यात्रा के लिए जाते समय बनारस व भारत की राजधानी दिल्ली का वर्णन किया है। कल्पना व दार्शनिक भावना से, लेखक ने पाठकों को भी यात्रा के आनन्द का अनुभव कराया है। एरोड्रम के दृश्य और हवाई जहाज से नीचे दिखाई देने वाले विहंगम दृश्यों का सजीव वर्णन इस पाठ में है। जयप्रकाशजी व उदयशंकरजी का प्रसंग उनके व्यक्तित्व की विशिष्टताओं को उजागर करता है। वर्णन में अन्तर्मन व बहिर्मन का सूक्ष्म अन्वेषण दर्शनीय है। पूरे प्रसंग में कल्पना के माध्यम से उड़ता चल कबूतर को प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है।*

**19 अप्रैल, 51**

**पटना – दिल्ली**

यह देखिए, मेरे पैरों में पंख लग गए मैं उड़ रहा हूँ। हाँ, मेरे पैरों में पंख बँध गए हैं, मैं उड़ रहा हूँ, उड़ा जा रहा हूँ।

यह, मैं इस एरोड्रम के ऊपर हूँ। वह ताड़ अब मेरे बहुत नीचे हैं। धरती की सीमाएँ जैसे सिमटी जा रही हैं। अब वे छिटपुट खेत नहीं, एक मुसल्लम धारीदार चादर है। वह गंगा का कछार। तेज धूप की तिलमिलाहट में ऐसा लग रहा है कि हिमालय की सीढ़ी का पहला जीना हो वह।

नीचे की सारी चीजें छोटी होती जा रही हैं। ताड़-खजूर, आम-नीम, सब मिलकर झरबेरी की छोटी-छोटी झुरमुटें ऐसी। पृथ्वी अब शतरंज की एक लंबी बिसात लगती है- किसी अनसिखुए की बनाई- धारियाँ, टेढ़ी-मेढ़ी, खाने छोटे-बड़े, किन्तु शतरंज की बिसात की तरह ही लुभावनी। जहाँ-तहाँ के गाँव उसकी गोटियाँ हैं – कोई शाह, कोई किश्ती, कोई प्यादा ।

यह सोनभद्र – यहाँ से उसकी धारा हमारी पुरानी धारा बागमती की पतली धारा ही सी तो मालूम पड़ती है।

ज्यों-ज्यों ऊँचे चढ़िए, भेदभाव मिटते जाते हैं। सीमाएँ नष्ट होती जाती हैं । एकरूपता बढ़ती जाती है।

किन्तु, मैं दर्शन की ओर कहाँ बहका जा रहा हूँ? चेतना झटका देती है, स्मृतियाँ पीछे पटक देती हैं।

पैरों में पंख बाँधना कौन नहीं चाहता ? बचपन से ही तो उड़ने की कोशिश कर रहा हूँ। शारीरिक असमर्थता जागृति में जिसे रोकती रही, अंतर्मन ने स्वप्न में उस साध को कितनी बार पूरा किया।

मेरे गाँव के निकट के ही एक भलेमानस के पास एक हाथी था। ननिहाल जाते समय मैं उस पर चढ़ा था। ऊँचे आसन पर झूमते हुए जाने में कम आनंद नहीं आया था, किन्तु वह हाथी भारी मन को जितना आनन्द नही दे पाया अंतर्मन में वह उतना ही भय बिठा गया ।

प्राय: ही स्वप्न में उस हाथी को देखता- और भी भयंकर रूप में कई सूँड कितने बडे-बड़े दाँत । वह अपने पैरों तले अपने कुचलने के लिए मुझे खदेड़ता। मैं भागता। मेरे नन्हें पैर कहाँ तक भागते? किन्तु यह क्या? अचानक मेरे पैरों में पंख फूट आते, मैं उड़ने लगता सर-सर-सर।

अंतर्मन ने बहिर्मन को ऐसा अभिभूत किया कि मन में उड़ने की साध दिन-दिन बलवती होती गई। जब विज्ञान ने साधन जुटाए तब तो और भी छटपटी बढ़ी।

कई बार सोचा क्यों न दस - पाँच रुपये लगाकर पटना शहर पर एक चक्कर देकर उसे पूरा ही कर लूँ । मित्रों के भी बार-बार आग्रह हुए।

किंतु कलाकार का हौंसला अरे कौआ उड़ान भी कोई उड़ान है? खाएँगे गेहूँ नहीं तो रहेंगे एहूँ।

1947 में आचार्य नरेन्द्र देव ने लिखा, मैं यूरोप यात्रा में जा रहा हूँ, साथ चलिए, पासपोर्ट लीजिए ।

तो बस ले लिया पासपोर्ट और ले लिया पासपोर्ट संसार भर का । जब पासपोर्ट के अफसर ने संसार के सारे देशों के नाम दरखास्त में देखे, तो वह मुसकराया ।

और, मुस्कराते रहे मेरे दोस्त। और संयोगवश जब वह यात्रा न हो सकी, तो उनकी मुस्कराहट परिहास में परिणत हो गई।

किन्तु, मैं तो बनार्ड शॉ का हामी। उसने अँगरेजों के बारे में एक जगह लिखा है- इस कौम के दिल में कोई इरादा जगता है, तो यह इस तरह उसे छुपाए दबाए रखती है कि एक दिन यह इरादा एक ज्वलंत विश्वास में परिणत हो जाता है और इस विश्वास की अखंड ज्योति उसमें इतनी शक्ति पैदा कर देती है कि वह जो चाहती है, कर के ही दम लेती है।

मित्र हँस रहे थे, पासपोर्ट की लिखावट धीमी पड़ती जाती थी, उसमें चिपकाए फोटो के चेहरे से भी अपने चेहरे में फर्क पाने लगा था। किन्तु इरादा दिन-दिन पुष्ट होता जाता था। चर्चाएँ बंद, विश्वास की आग अब धुएँ के बदले चिनगारियाँ चमकती थीं।

कि यह क्या हुआ ?

अभी उस दिन भोर-भोर - मेरी भोर आठ बजे के बाद होती है - बैठा था कि भाई ब्रजनंदन आजाद पहुँचे और हाथ में एक तार रखते हुए बोले - विलायत जाने की तैयारी करो ।

यह तार ब्रिटिश सूचना सेवा का था, जो छह भारतीय पत्रकारों को अपने खर्च से विलायत भ्रमण को ले जा रही थी।

यह तीन अप्रैल की बात है, और आज उन्नीस अप्रैल है। ये सोलह दिन - कैसे कटे "कैसे जा सकेंगे आप?आप पर यह जिम्मेदारी, वह जिम्मेदारी ।"

" जरूर जाओ भाई, कोई ऐसा मौका भी छोड़ता है?"

दूसरी बात कहने वाले बहुत लोग थे, किन्तु पहली बात दो ही व्यक्तियों ने कही तो भी उन दोनों की बात का उल्लंघन क्या मैं आसानी से कर सकता था?

मना करने वालों में एक थे जयप्रकाश जी, जिन्हें दैनिक जनता की चिन्ता थी और चिन्ता थी आगामी आम चुनाव की। रानी कहती थी, साढ़े सात साल तुम जेल में रहे, मैनें काट दिए, क्योंकि परिवार छोटा था। अब यह बोझ मुझसे दो महीने नहीं ढोया जा सकता ?

करीब एक सप्ताह अपने ही मन में बारी-बारी से उठने वाले हाँ-ना के बीच झूलता रहा। किन्तु अचानक एक दिन विश्वास की धूनी जोरों से धधक पड़ी- तय कर लिया मैं जाऊँगा ।

और, आज जा रहा हूँ।

आज जा रहा हूँ - पैरों में पंख बाँधे उड़ा जा रहा हूँ । यह देखिए, हमारा हवाई जहाज तेजी से बढ़ा जा रहा है-

मै उसके साथ उड़ा जा रहा हूँ । कहाँ आरा छूटा, कहाँ बक्सर गया ।

वर्तमान ने भूत को फिर पीछे छोड़ दिया।

चिलचिलाती धूप में नीचे देखता हूँ कहीं हरियाली नहीं। क्या बिहार की सीमा पीछे छूट गई है?

अरे, अब तो हमारा प्लेन नीचे उतर रहा है। हमारे चारों ओर बस्तियाँ हैं, पेड़ हैं, जमीन हैं, जहाँ खेती की टेढ़ी-मेढ़ी मेड़ें हैं। यह लीजिए, यह मैदान, और यह जली-अधजली दूब। और, यह है बनारस का हवाई अड्डा ।

सभी यात्री एक-एक करके उतर गए। मैं भाव-विभोर बैठा रहा । फिर अकेलापन खटका तो सीढ़ी से नीचे उतरा, वेटिंग रूम में आया।

यह सामने कौन बैठा है?

''क्षमा करें, क्या आप उदयशंकर हैं ?''

''जी हाँ आप मुझे पहचानते हैं ?''

''जी, मैं भी एक छोटा-मोटा कलाकार ही हूँ । जिसे आप शरीर की भंगिमा द्वारा प्रकट करते हैं, उसे कलम द्वारा उतारने की कोशिश करता हूँ।''

फिर तो बातें शुरू हुई । उदयशंकर कलकत्ता जा रहे हैं । साथ में पत्नी है, बच्चा है। नटखट बच्चा बार-बार माँ से कुछ पूछता है। इस समय देहरादून से आ रहे हैं ये लोग ।

''अपने कला-केन्द्र के बारे में कुछ बता ...''

''हाँ, सोच रहा हूँ , 1952 में उसे अलमोड़ा के बदले देहरादून में खोलूँ । देहरादून बड़ी अच्छी जगह है।''

मैने बताया, लेखनी धारी का बेटा, राइफलधारी बनने जा रहा है।

''देश को उसकी भी जरूरत है। अच्छा किया है।''

मैंने अपने भाग्य को सराहा कि अपनी इस यात्रा के प्रारंभ में ही उनके जैसे कलाकार के दर्शन हुए। पति-पत्नी को नमस्कार कर और बच्चे को चूमकर मैं बाहर आया, तो देखा, सभी साथी सीढ़ियाँ पार कर रहे हैं ।

फिर वही -खड़खड़-खड़खड़ - साँय-साँय सर-सर-सर- पुरानी दृश्यावली दुहरा रही है।

किन्तु मुझे यह क्या हो रहा है? सर में चक्कर क्यों? अरे, यह पेट में क्या अजीब हुड़-हुड़ ऐसी हलचल हो रही है?

पीछे के हिस्से में देखा, लिखा है, टायलेट। लड़खड़ाते पाँव से उस ओर बढ़ा। दरवाजा खोलकर भीतर गया कि उल्टी। निबटकर, हाथ-मुँह धोकर, बाहर आया। तबीयत कुछ हलकी मालूम हुई। होस्टेस से लेकर एक नारंगी खाई। फिर आँखे मूँद लीं। झपकी टूटी, तो लखनऊ ।

नीचे उतर कर रिफ्रेशमेंट रूम में गया। सोचा, कुछ पीऊँ। खोया-सा खड़ा था कि आवाज आई- ''आइए, बैठिए।''

अरे, यह अँगरेज - निखालिस गोरा - हिन्दी बोल रहा है। निकट जाकर बैठा। ब्वाय पानी लिए आ रहा था, उससे माँगकर पी लिया। फिर गोरे साहब से मालूम हुआ वे सज्जन पादरी हैं। बहुत दिनों से पटना में ही रहते हैं। सेंट जेक्यिर स्कूल से इनका संबंध है। पटना में मेरी विदाई देखकर ही समझ गए थे, मैं कोई विशेष व्यक्ति हूँ।

उन्होंने तुरंत हिन्दी की बात चलाई, कहा- आजकल हिन्दी को लोग संस्कृत बना रहे हैं। प्रेमचंद कैसा अच्छा लिखते थे। पटना के हिन्दी अखबार तक ऐसी भाषा लिखते हैं कि डिक्शनरी लेकर ही उसे समझा जा सकता है।

काश, एक विदेशी हिन्दी-भक्त की यह सम्मति हमारे साहित्यकार और पत्रकार सुन पाते।

हमारा विमान लगभग साढ़े सात हजार मीटर ऊँचे जा रहा है, उसकी रफ्तार भी घंटा 225 किलोमीटर है और दिल्ली हम निश्चित समय से दस मिनट पहले पहुँच जाएँगे।

यह दिल्ली है। सब उतर रहे हैं। मैं भी उतरा।

एरोड्रम के सामने छह फुट ऊँचे एक गोरे सज्जन खड़े हैं। मैं किसी परिचित सूरत की तलाश में था कि वह आकर बोले "क्या आप मिस्टर बेनीपुरी हैं ?"

वह ब्रिटिश सूचना सेवा के प्रतिनिधि थे। इनके संगठन की पुख्तगी देखकर तो मैं पंद्रह दिनों से हैरान हूँ ।

छोटी-छोटी बातों के लिए भी चिट्ठियाँ, तार।

यहाँ भी मोटर लिए हाजिर । मिजाजपुर्सी, मौसमपुर्सी। फिर कल के प्रोग्राम के बारे में तय। अवधेश्वर के डेरे पर, - वेस्टर्न कोर्ट में - पहुँचाकर लौट गए। यह कहते कि कल प्रातः काल नौ बजे फिर मिलूँगा ।

शाम को हलकी सी आँधी आई। झींसी पड़ी। दिल्ली की सड़कें नहाई हुई दुल्हन-लगने लगीं।

सोंधी जी ने ख़बर दी, राष्ट्रपति के निजी सचिव भाई चक्रधर जी के साथ अभी खाना है ।

यह दिल्ली का राजकीय भवन। कैसा रोब। ऊँची-ऊँची अट्टालिका के नीचे लंबे- लंबे गलियारे। जहाँ-तहाँ वायसराय के चित्र, अँगरेजों द्वारा बनाए भवनों के चित्र, उन युद्धों के चित्र जिनमें विजयी बनकर अँगरेज भारत के शासक हुए। उन्हें हटाया नहीं गया है। सोचा गया, राजभवन को म्यूजियम मान लिया जाए, ये चित्र यहाँ सुरक्षित रहे।

जगह-जगह ज़री के पग्गड़ और पट्टे वाले राजकीय भवन के कर्मचारी झट सलामियाँ देते और हमारी सूरत-शक्ल को घूर-घूर कर देखते रहे। लिफ्ट से ऊपर की मंजिल पर । भाई चक्रधर उसी स्वाभाविक मुस्कान से मिले और डाँट पिलाई - देर क्यों कर दी?

भोजन घर। टेबल पर खादी का आधिपत्य। उस पर अँगरेजी तश्तरियाँ और नीम-अँगरेजी भोजन। चाँदी के छुरी काँटे। सोंधी जी उनके व्यवहार की बारीकियाँ भी बताते जा रहे हैं- विलायत में इसकी जरूरत पड़ेगी न?

भोजन के बाद पान। पान न हो तो फिर बाबू चक्रधर शरण क्या?

बार-बार सोचता, सदाकत आश्रम का फकीर इस शाही भवन में । इतिहास भी क्या-क्या आश्चर्य पैदा करता है? सत्य घटनाओं से बढ़कर आश्चर्य की बात और क्या होगी?

देर हो रही है, कभी दिन में आकर इस भवन को अच्छी तरह देखूँगा। चक्रधर ने बताया, परसों तुम्हे राष्ट्रपति से मिलना है। बस और उत्सुकताएँ उसी अवसर के लिए रिजर्व।

थका हूँ, नींद आ रही है, तारीख़ बदल चुकी है, अब बहिर्मन विश्राम कर, अंतर्मन के लिए स्थान खाली किया जाए।

पैरों में पंख बाँधकर पटना से दिल्ली, कुटिया से राजभवन तक। अब बेनीपुरी सोओ, अंतर्मन, अपने पंख फैलाओ।

## अभ्यास

### बोध प्रश्न

1. सोनभद्र नदी किस प्रदेश में बहती है ?
2. यूरोप यात्रा पर जाने के लिए किसने पत्र लिखा ?
3. जयप्रकाश जी को किस-किस की चिन्ता थी?

4. बिहार से चलने के बाद लेखक का प्लेन कौन से शहर में उतरा ?

5. शरीर की भंगिमा द्वारा भाव प्रकट करने वाले व्यक्ति का नाम क्या था?

6. ननिहाल जाते समय लेखक की हाथी के साथ क्या घटना घटी ?

7. बर्नार्ड शा ने अँगरेजों के बारे में क्या लिखा है?

8. ब्रजनन्दन आजाद ने तार के द्वारा क्या सूचना दी ?

9. गोरे अँगरेज ने हिन्दी के बारे में क्या कहा ?

10. दिल्ली के राजभवन में कौन-कौन से चित्र लगे थे?

11. हवाई जहाज यात्रा के समय नीचे के दृश्यों का वर्णन लेखक ने किस प्रकार किया है?

12. अन्तर्मन व बहिर्मन का परस्पर क्या सम्बन्ध है? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

13. बनारस में उदयशंकर जी से लेखक की क्या बातचीत हुई?

14. भावार्थ स्पष्ट कीजिए – ''ज्यों ज्यों ऊँचे चढ़िए भेदभाव मिटते जाते हैं। सीमाएँ नष्ट होती जाती हैं, एकरूपता बढ़ती जाती है।''

## योग्यता विस्तार :-

1. अपनी कल्पना द्वारा किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

2. यदि आपको मध्यप्रदेश के पर्वतीय पर्यटन स्थल पचमढ़ी जाना हो तो क्या-क्या तैयारी आवश्यक होगी? लिखिए।

3. मध्यप्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों की एक सूची बनाइए, एवं उनके चित्रों का संकलन कर एक एलबम तैयार कीजिए।

### शब्दार्थ

एरोड्रम – हवाई अड्डा, मुसल्लम – माना हुआ, स्वीकार किया हुआ, झरबेरी – वनबेर, अनसिखुए– नौ सिखिए, पासपोर्ट – देश से बाहर जाने का एक दस्तावेज, अभिभूत – प्रभावित (भाव विभोर), दरख्वास्त – आवेदन पत्र, फर्क – अंतर, तय करना – निश्चित करना। चिलचिलाती – बहुत कड़ी ।

* * *